International Journal of Applied Research 2017; 3(10): 355-358

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(10): 355-358
www.allresearchjournal.com
Received: 12-08-2017
Accepted: 20-09-2017

मो. जमील हसन अंसारी
इतिहास विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
मो. जमील हसन अंसारी
इतिहास विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय दरभंगा, बिहार, भारत

1857 की जनक्रांति में पीर अली की भूमिका

मो. जमील हसन अंसारी

सारांश
1857 ई. का व्रिदोह भारतीय राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम की अत्यंत ही महत्वपूर्ण घटना मानी जाती है। दरअसल, 1857 ई. के प्रथम संगठित विद्रोह को 'प्रथम मुक्ति संग्राम' भी माना जाता है। आमतौर पर लोग भारत में ब्रिटिश शासन की स्थापना के साथ ब्रिटिश नीति से प्रभावित थे ब्रिटिश शासन के 100 वर्षो के भीतर ब्रिटिश समाज के हर वर्ग, प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से ब्रिटिश अत्याचारों से प्रभावित थे। नतीजतन, राजा से एक आम आदमी तक पर बड़ा प्रभाव पड़ा जिसके लिए भारतीय समाज के प्रत्येक वर्ग ने 1857 के विद्रोह में हिस्सा लिया। उनमें से ही एक लोकप्रिय नाम इतिहास के पन्नों में पीर अली को इंगित करता है। 1857 का सिपाही व्रिदोह महज विद्रोह भर या साधारण घटना नहीं थी, बल्कि भारतीय स्वाधिनता संग्राम की शुरूआत थी। अभिलेखों से ज्ञात होता है कि पीर अली और उनके साथियों ने 1857 में वहाबी आंदोलन का नेतृत्व किया था, क्योंकि वो खुद इससे जुड़े थे। गौरतलब है कि बिहार की राजधानी पटना में शहीद पीर अली खान के नाम पर एक छोटा सा पार्क है और शहर से हवाई अड्डे को जोड़ने वाली एक सड़क भी। शहर में उनकी मजार भी है और उनके नाम का एक मोहल्ला पीरबहोर भी। पिछले आठ सालों से बिहार सरकार उनकी शहादत की याद में 7 जुलाई का दिन शहीद दिवस के रूप में मनाती है। इसके बावजूद देश और बिहार तो क्या, पटना के भी बहुत कम लोगों को पता है कि पीर अली वस्तुतः कौन थे और उनकी शहादत क्यों महत्त्वपूर्ण है। प्रस्तुत आलेख 1857 की जनक्रांति में पीर अली की भूमिका में पीर अली जो भारतीय स्वतंत्रता संग्राम 1857 के गदर के शहीदों में एक ऐसा नाम है जिसे इतिहास ने लगभग विस्मृत कर दिया है। इसके अध्ययन के माध्यम से जो आज भी उनके पहचान तथा वजूद की शहादत का कोई नामलेवा तक नहीं है। उनके शहादत दिवस पर जो समारोह होता है, उसमें सरकार के कुछ नुमाईंदों के अलावा आम लोगों की भागीदारी नगण्य ही होती है पर गहन विचार एवं इसके प्रभावों को इंगित करता है।

मुख्य शब्दः भारतीय इतिहास, 1857, बिहार, पीर अली, मुस्लिम, दानापुर, पटना, स्वतंत्रता संग्राम, क्रांतिकारी, पत्रिकाएँ, वहाबी आंदोलन, विलियम टेलर, पीरबहोर, मजार, फांसी, गदर, जुलूस, देष, अंग्रेज, योगदान, आदि।

प्रस्तावना
आजादी का दीवाना और अनन्य राष्ट्रभक्त शहीद पीर अली के विषय में विस्तारपूर्वक चर्चा करने के पहले तत्कालीन परिस्थितियों पर विचार कर लेना उचित और आवश्यक है ताकि यह स्पष्ट हो सके कि सन् 1857 की जन–क्रांति या जंगे आजादी के प्रथम संग्राम की ज्वाला किन परिस्थितियों के कारण और कहाँ–कहाँ तथा कब से सुलग रही थी। जिसकी लपट प्रचंड रूप से पूरे हिन्दुस्तान में 1857 में फैल गयी और ब्रिटिश साम्राज्य की नींव भारत में हिल गयी।
सन् 1757 में पलासी के युद्ध में भारतीयों को हराकर अंग्रेजों ने इस देश में यूनियन जैक फहराया और सारे भारत को अपने अधीन करने की नीति को तेजी से बढ़ाने का जोरदार प्रयत्न किया। मीर जाफर को बंगाल का नवाब नियुक्त किया गया और पूर्वी भारत में ब्रिटिश सत्ता की मजबूत नींव डाली गयी। मीर जाफर को कुछ दिनों बाद ही गद्दी से उतार दिया गया और उसके दामाद मीर कासिम को बंगाल का नवाब बना दिया गया जो एक कठपुतली मात्र था। किन्तु ज्यों ही उसने अपने अधिकारों का प्रयोग करना शुरू किया उसे भी हटा दिया गया।
ब्रिटिश शासन ने बिहार और देश के दूसरे प्रान्तों में एक के बाद एक ऐसे कार्य किये जिसके कारण जन–मानस में भीतर ही भीतर ज्वालामुखी की आग धधकने लगी थी और 1857 में असंतोष का यह ज्वालामुखी फूट पड़ा। संगठन बनाकर शासन के खिलाफ इस क्रांति के पूर्व ही विद्रोह का संकल्प कर लिया और 1857 तक आते–आते सारे भारतीय तन कर खड़े हो गये कि ब्रिटिश शासन को जड़मूल से उखाड़ दिया जाये। एक सैनिक अफसर ने 1857 ई. में ''बंगाल की सेना का विद्रोह 1857'' नामक पुस्तक में लिखा था कि–मीर कासिम के समय से ही पटना एक विद्रोही शहर के रूप में प्रख्यात रहता आया है। उक्त पत्र में यह विस्तारपूर्वक उल्लेख है कि कहाँ–कहाँ असंतोष की ज्वाला धधक रही है और उसमें कौन से लोग शामिल थे। बनारस में चेत सिंह का विद्रोह पड़ोसी प्रांत बिहार में विद्रोह की प्रतिक्रिया से प्रभावित था। बिहार के कतिपय जमींदार चेत सिंह के

सहायक थे। सारन के तत्कालीन कलक्टर ने भी 27 अगस्त, 1781 को पटना के माल महकमे के सदर अफसर मिस्टर रॉस को लिखा था कि रजा अली खां जो पहले सासाराम का आमिल मालगुजारी का तहसीलदार था, राजा चेत सिंह का समर्थक है। उसी तरह उस जिले के उज्जैन राजपूत, टिकारी के राज परिवार के पीताम्बर सिंह भी चेत सिंह के पक्ष में है। इनके साथ वीर और दक्ष सैनिक तथा घुड़सवार भी है। इतना ही नहीं रॉस द्वारा पटना के फौज सेनाध्यक्ष मेजर हार्डी को 6 अक्टूबर, 1781 को लिखे पत्र के अनुसार, हथुआ के फतेह शाह ने भी सारण में गोलमाल मचा रखा था। गया जिला के सिरिस और कुटुम्बा के जमींदार नारायण सिंह भी विद्रोह में शामिल थे, जिन्होंने कंपनी सेना को रामनगर के पास आगे जाने से रोका था। इस अपराध के लिए नारायण सिंह को गिरफ्तार कर 5 मार्च, 1786 को राजबंदी के रूप में ढाका भेज दिया गया था। नरहर और समाय के राजा अकबर अली खां ने भी कंपनी के खिलाफ इसी समय विद्रोह किया। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि बिहार के जमींदारों तथा जन साधारण में ईस्ट इंडिया कंपनी के तानाशाही रवैये, बेलगाम बर्बर कारनामों तथा शोषण और अत्याचार के कारण असंतोष की भावना चरम पर पहुँच चुकी थी। नतीजा यह था कि कंपनी के शासन को जड़मूल से उखाड़ फेंक देने की योजना पटना में तैयार हुई थी।

1857 की महाक्रांति भारत को ब्रिटिश साम्राज्यशाही की श्रृंखलाओं से मुक्त करने का प्रथम देशव्यापी संगठित प्रयत्न था। मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर ने दिल्ली की सेना का नेतृत्व स्वीकार करते हुए अंग्रेजों के खिलाफ क्रांति का एलान कर दिया था।

सुप्रसिद्ध इतिहासकार मैलिसन ने अपनी पुस्तक 'भारतीय विद्रोह का इतिहास' के तृतीय भाग की भूमिका में लिखा है–मैं तो इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि 1857 का युद्ध चरबी लगे कारतूसों के कारण नहीं हुआ, न सिपाहियों के मस्तिष्क में इसका जन्म हुआ और न उन्होंने इसकी योजना बनाई। चरबी लगे कारतूस तो एक उपयुक्त साधन मात्रा थे, जिसका षडयंत्रकारियों ने अत्यंत कुशलता से उपयोग किया भारतीयों ने मन से कभी भी ब्रिटिश सत्ता को स्वीकार नहीं किया। डलहौजी ने सैनिक और संगीन के बल पर फूट से लाभ उठाते हुए भारतीय राजे रजबाड़ों को गद्दी से हटाकर अपने साम्राज्य का दायरा बढ़ाया। इनलोगों ने अंग्रेजों के इस अन्यायपूर्ण कार्य को अनैतिक और अत्याचार माना। फलस्वरूप उनके बीच असंतोष की समी हद से बाहर हो गई।

देश के सारे उत्तरी भारत में ब्रिटिश गुलामी की जंजीर तोड़ फेंकने और मातृभूमि का आजाद कराने के लिए क्रांति की आग धधक रही थी। ऐसी स्थिति में बिहार कैसे शांत रहता। पटना क्रांतिकारियों का एक प्रमुख केन्द्र था। यह शहर मुस्लिम धर्मावलंबी वहाबियों का सन् 1822 से करीब 46 वर्षो तक एक मजबूत अड्डा था। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम और खासकर उत्तर प्रदेश तथा बिहार की जन क्रांति में इनकी बड़ी ही महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। पटना में इसका संचालन एक धर्मनिष्ठ संपन्न मुस्लिम परिवार द्वारा होता था। वहाबी आंदोलन के प्रमुख प्रवर्त्तक सैयद अहमद शहीद (जन्म 1786) थे जो उत्तर प्रदेश के रायबरेली के निवासी थे। ऐतिहासिक साक्ष्य के आधार पर यह स्पष्ट है कि 1821 में वे पटना आये थे तथा पटना में एक केन्द्र स्थापित किया गया ताकि यहाँ से धन एकत्र किया जाये और स्वयंसेवक तैयार किये जा सकें। पटना के शादीकपुर परिवार के सदस्यों ने इनको अपना आध्यात्मिक नेता स्वीकार किया और इस आंदोलन को आगे बढ़ाया। 1831 में बालाकोट की लड़ाई में सिख सेनापति शेरसिंह के खिलाफ युद्ध में सैयद साहब शहीद हो गये। पटना के खलिफाओं में पटना के विलायत अली और इनायत अली की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। इसके अनुयायी अपने को अहले हदीस कहते। वहाबियों का मानना था कि जब तक भारत में अंग्रेजो का शासन रहेगा तब तक वहाबियों के उद्देश्य की पूर्ति नहीं हो सकती। अतः उनलोगों ने ब्रिटिश सत्ता का अंत करने का निश्चय किया। अंग्रेजों को उनकी गतिविधियों की जानकारी मिल रही थी। 1857 की जन क्रांति के पूर्व 1845–46 में अंग्रेजों के खिलाफ बिहार में षडयंत्र आरंभ हुआ और कंपनी की सेना में कार्यरत सैनिकों को विद्रोह पर उकसाने के लिए संपर्क किया जा रहा था। 1846 में इसकी जानकारी ब्रिटिश अधिकारियों को मिली और उन्होंने इसको कुचल डाला।

पीर अली खां और उनके साथियों ने 1857 में 'बहाबी' आंदोलन का नेतृत्व किया था। क्योंकि वो खुद इससे जुड़े थे, इनकी नुमाइंदगी ''उलमाए सादिकपुरीया'' करते थे। 1857 की क्रांति के वक्त बिहार में घूम–घूमकर लोगों में आजादी और संघर्ष का जज्बा पैदा करने और उन्हें संगठित करने में उन्होंने बड़ी भूमिका निभाई थी।

बिहार के एक प्रमुख मुस्लिम क्रांतिकारी पीर अली के बारे में बहुत कम लोग जानते हैं। एक गरीब बुक बाइंडर पीर अली खान, जो स्वतंत्रता सेनानियों क बीच महत्वपूर्ण पत्रिकाएं पुस्तिकाएं और खुफिया संदेशों को गुप्त रूप से वितरित करते थे, उन्हें तत्कालीन पटना के कमिशनर विलियम टेलर द्वारा सार्वजनिक स्थान पर फांसी दी गई थी। पीर अली एक स्वतंत्रता सेनानी थे जो अंग्रेजों से लड़े और उन्हें फांसी दे दी गई। पीर अली बाबू वीर कुँवर सिंह की तरह 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के बिहार चैप्टर के नायक थे और आजादी के जंग में उनका योगदान कुँवर सिंह से कम महत्त्वपूर्ण नहीं था। पीर अली खान और उनके साथियों ने 1857 में 'वहाबी' आंदोलन का नेतृत्व किया था, क्योंकि वो खुद इससे जुड़े थे, इनकी नुमाइंदगी ''उलमाए सादिकपुरीया'' करते थे, अब बहुत से लोग जानते हैं कि पीर अली खान कौन थे। यह शहीद अब पटना डीएम के निवास के विपरीत बच्चों के पार्क को विकसित करने के लिए राज्य सरकार के फैसले के लिए बहुत कम ज्ञात है और खान के नाम पर इसे नामित किया गया था। 3 जुलाई को पटना में क्रांति की चिनगारी जल उठी किन्तु सिखों की सहायता से इसे आसानी से दबा दिया गया। क्रांतिकारियों का मुख्य नेता पीर अली जिसे 7 जुलाई, 1857 को उसे एवं उसके 30 विद्रोहियों को पटना आयुक्त विलियम टेलर की उपस्थिति में मौत की सजा सुनाई गई थी। पीर अली उस वक्त 37 साल के थे। फलस्वरूप बिहार में असंतोष की हवा फैल गई दानापुर छावनी में विद्रोह हो गया।

अभिलेखों से ज्ञात होता है कि पीर अली को यातनाएं दे देकर मारा गया। कमीश्नर टेलर स्वयं लिखता है कि पीर अली ने बड़ी वीरता और धार्मिक भाव से यातनाओं और मृत्यु, दोनों का सामना किया। दानापुर में उस समय तीन हिन्दुस्तानी पलटन, एक गोरी पलटन और कुछ तोपखाना था। पीर अली के मृत्यु के बाद 25 जुलाई को देशी पलटनों ने स्वाधीनता का ऐलान कर दिया।

पटना में पीर अली का मजार भी है और उनके नाम का एक मोहल्ला पीरबहोर भी है। आजमगढ़ के गाँव मुहम्मदुपर में जन्में पीर अली पारिवारिक वजहों से अपनी किशोरावस्था में ही घर से भागकर पटना आ गए थे। पटना के एक जमींदार नवाब मीर अब्दुल्लाह ने उनकी परवरिश की और उन्हें पढ़ाया–लिखाया। बड़े होने के बाद आजीविका के लिये पीर अली ने किताबों की एक छोटी दुकान खोल ली। वे साधरण पुस्तक विक्रेता थे, फिर भी उन्हें पटना के कद्दावर लोगों का समर्थन प्राप्त था। क्रांतिकारी परिषद् पर उनका अत्यधिक प्रभाव था। उन्होंने धनी वर्ग के सहयोग से अनेक व्यक्तियों को संगठित किया और उनमें क्रांति की भावना का प्रसार किया। उनकी छोटी सी दुकान धीरे–धीरे प्रदेश के क्रांतिकारियों के अड्डे में तब्दील हो गया। गौरतलब है कि इस दौरान वे दिल्ली के क्रांतिकारी अजिमुल्लाह खान से मार्गदर्शन प्राप्त करते थे। कालांतर में पीर अली ने अंग्रेजो की गुलामी से देश को आजाद कराने की मुहिम में अपने हिस्से का योगदान देना अपने जीवन का मकसद बना लिया। हालांकि उनके द्वारा क्रांतिकारियों के संपर्क में आने के बाद दुकान पर देश भर से क्रांतिकारी साहित्य मंगाकर बेचीं जाने लगी।

साथ–ही–साथ 1857 की क्रांति के वक्त बिहार में घूम–घूमकर लोगों में आजादी और संघर्ष का जज्बा पैदा करने और उन्हें संगठित करने में उन्होंने बड़ी भूमिका निभाई थी। उसी दौर में उन्होंने अपने कुछ साथियों के साथ मिलकर एक ऐसी योजना बनाई जिसकी भनक अंग्रेजों को नहीं लग सकी। लोगों ने उन्हें यह आश्वासन दिया कि वे ब्रिटिश सत्ता को जड़मूल से नष्ट कर देंगे। जब तक हमारे बदन में खून का एक भी बून्द रहेगा, हम फिरंगियों का विरोध करेंगे, लोगों ने यह कसमे खाई। योजना के अनुसार 3 जुलाई, 1857 को पीर अली के घर पर दो सौ से ज्यादा आजादी के दीवाने इकट्ठे हुए।

पीर अली ने सैकड़ों हथियारबंद लोगों की अगुवाई करते हुए पटना के गुलजार बाग स्थित उस प्रशासनिक भवन पर धावा बोल दिया। यह वह भवन था जहाँ से रियासत की क्रांतिकारी गतिविधियों पर नजर रखी जाती थी और उनपर हमले में घिरे अंग्रेजों ने डा. लॉयल के नेतृत्व में भीड़ पर फायरिंग शुरू कर दी। क्रांतिकारियों की जवाबी फायरिंग में डा. लॉयल अपने कई साथियों समेत मारा गया। अंग्रेजों की अंधाधुंध गोलीबारी में कई क्रांतिकारी शहीद हुए और दर्जनों घायल। पीर अली और उनके ज्यादातर साथी हमले के बाद बच निकलने में सफल हो गए। दो दिनों बाद 5 जुलाई को पीर अली और उनके दर्जनों साथियों को पुलिस ने बगावत के जुर्म में गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तारी के बाद उन्हें यातनाएं दी गई। पटना के कमिश्नर विलियम टेलर ने उनसे कहा कि अगर वे देश भर के अपने क्रांतिकारी साथियों के नाम बता दे तो उनकी जान बख्शी जा सकती है। परन्तु पीर अली ने उनका प्रस्ताव ठुकरा दिया। जवाब में उन्होंने कहा था–''जिन्दगी में कई ऐसे मौके आते हैं जब जान बचाना जरूरी होता है। कई ऐसे मौके भी आते हैं, जब जान देना जरूरी हो जाता है। यह वक्त जान देने का ही है'। अंग्रेजी हुकूमत ने दिखावे के ट्रायल के बाद 7 जुलाई, 1857 को पीर अली को उनके कई साथियों के साथ बीच सड़क पर फांसी पर लटका दिया। फांसी के फंदे पर झूलने के पहले पीर अली के आखिरी शब्द थे–'तुम हमें फांसी पर लटका सकते हो, लेकिन हमारे आदर्श की हत्या नहीं कर सकते। मैं मरूंगा तो मेरे खून से लाखों बहादुर पैदा होंगे जो तुम्हारे जुल्म का खात्मा कर देंगे।'

प्रथम स्वतंत्रता संग्राम 1857 गदर के सहयोगी

पीर अली : पीर अली 1857 के आंदोलन के संगठक थे। उन्होंने ही पटना की सड़कों पर निकलने वाले पहले अंग्रेजी राज विरोधी जुलूस का नेतृत्व किया था।

राजा मेंहदी अली खां : नवादा के अंतीपुर के रहने वाले राजा मेंहदी अली खां का नाम विद्रोहियों के नाम की सूची में पहले स्थान पर था।

वारिस अली : पटना के मुसलमानों के साथ राजद्रोहात्मक पत्र व्यवहार के कारण अंग्रेजों ने इन्हें 23 जून, 1857 को गिरफ्तार किया बाद में फांसी दे दी।

लुत्फ अली खां : 1857 विद्रोह के दौरान इन पर अपने मकान में गुप्त बैठक करने का आरोप कमिश्नर विलयम टेलर ने लगाया। लुत्फ अली पटना के मशहूर बैंकर थे।

अली करीम : वारिस अली की गिरफ्तारी के बाद इन पर सरकार के खिलाफ बगावत का आरोप लगा। अंग्रेजी सरकार ने इन पर दो हजार रूपये इनाम रखा था।

जवाहिर रजवार : नालंदा व नवादा में 1857 में छापामार युद्ध गुजरा, तो बगावत का झंडा बुलंद किया।

हैदर अली : विद्रोह के दौरान हैदर अली ने राजगीर को कब्जे में ले लिया था। वे नालंदा के पहले व्यक्ति थे, जिन्हें फांसी की सजा दी गयी थी।

नादिर अली : जयमंगल व माधव सिंह के साथ अंग्रेजों के छक्के छुड़ाये, बिहारशरीफ के चरकोसा गांव के नादिर की चतरा, जहारीबाग, डारंडा, रांची में विद्रोह में मुख्य भूमिका थी।

कुरबान अली : रांची समाहरणालय में कुरबान नाजीर के रूप में कार्यरत थे। 1857 के विद्रोह के बाद सरकारी संपत्ति की लूट व अन्य आरोप में काला पानी की सजा हुई।

सलामत–अमानत : देवघर के रोहिनी में 12 जून, 1857 के विरोध के महानायक सलामत अली–अमानत अली थे। जिन्होंने मेजर मैकडोनाल्ड व कई अधिकारियों पर हमला किया था।

निष्कर्ष : 1857 की जनक्रांति वस्तुतः भारतीय स्वतंत्रता का प्रथम संग्राम है। भारतीय इतिहास की गौरव गाथा है और भारतवासियों के लिए अत्यंत प्रेरणाप्रद, स्फूर्तिदायक, और रोमांचकारी परिच्छेद है। इस क्रांति के बाद भारतीय जन मानस में अभूतपूर्व परिवर्तन हुआ। इसी मुक्ति संग्राम ने सभी भारतीय, चाहे वे किसी धर्म या मजहब, किसी वर्ण, किसी वर्ग, किसी सम्प्रदाय, किसी जाति, किसी व्यवसाय के हों, सबों ने एकजूट होकर विदेशी सरकार को जड़–मूल से उखाड़ फेकने का संकल्प किया और 1947 में हम पूर्ण स्वतंत्र राष्ट्र हो गये।

संदर्भ सूची :

1. Taylor, William., Our Crisis.
2. Biswas AK, abridged by IK. Sukla, Unsung Martyrs of, 1857.
3. Forrest GW, A History of Indian Mutiny.
4. Irshad, Naqui Ahmad, Account of Major Thomas Rettary, Darwan-i-raftah.
5. पटना के अंग्रेज निवासियों के नाम पटना के कमिश्नर का पत्र, 8 दिसंबर, 1857
6. सम म्युटिनी टेलीग्राम्स इन दी बिहार, एस. आई. आर. सी. पृ. 152
7. नरेन्द्र कुमार राय, हिन्दुस्तान, पटना, मंगलवार, 17 अक्टूबर, 2006, सासाराम के डिप्टी मजिस्ट्रेट कोल का शाहाबाद के मजिस्ट्रेट को 8 जून, 1858 ई. को पत्र
8. बिहार के कार्यकारी मजिस्ट्रेट का पटना के कमिश्नर को पत्र, नंबर 369, 30 जुलाई, 1859.
9. दत्ता, के. के. सम अनपब्लिश्ड इंग्लिश लेटर्स ऑफ हिस्टोरिकल इम्पोर्टेंस, पी. आई. एच. आर. सी, 16वाँ सम्मेलन, कलकत्ता, 1939
10. इस्लाम, शम्सुल, रेबल सिख इन 1857, नई दिल्ली, 2008
11. एंब्री, ए. टी, 1857 इन इंडियाः म्युटिनी और वार ऑफ इंडिपेन्डेंस, डी. सी. हेल्थ एंड कंपनी, बोस्टन, 1963
12. के. जे. एच., भारत में सिपाही युद्ध का इतिहास, (3 वो.), लंदन, 1867
13. कुमार अजीत, बिहार का इतिहास (प्रारंभ से 1757 ई. तक) जानकी प्रकाशन, पटना, 2005
14. ग्रोवर, बी. एल., मेहता अलका एवं यशपाल, आधुनिक भारत का इतिहास, रामनगर, नई दिल्ली, 2011
15. गेंदा, सिंह, दी इंडियन म्यूटिनी ऑफ 1857 एंड दी सिक्ख, डेल्ही, 1869
16. चन्द्रा, बिपिन, भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय दूसरा संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण, 1998.

17. चौधरी, प्रसन्न कुमार एवं कान्त, श्री, 1857 बिहार–झारखंड में महायुद्ध, राजकमल प्रकाशन, पहला संस्करण 2008
18. चौधरी, पी. सी. राय, बिहार में 1857, 1959
19. चंद्र, बिपिन, मुखर्जी मृदुला, मुखर्जी आदित्य, पनिकर क. न., महाजन सुचेता, भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय, 2008
20. चौधरी, आर. के., हिस्ट्री ऑफ बिहार, मोतीलाल बनारसी दास, बनारस, 1958
21. चंदा, एस. एन., 1857 सम अनटोल्ड स्टोरीज, डेल्ही, 1976
22. ताराचंद, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास, खंड–1–4, दिल्ली, 1981–84
23. ताराचंद, भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का इतिहास, खंड–2, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, दिल्ली, 2007
24. दत्त, के. के., बिहार में स्वातंत्र्य आंदोलन का इतिहास, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना, प्रथम संस्करणः 1974
25. दत्त, के. के., बिहार में स्वातंत्र्य आंदोलन का इतिहास, भाग–2, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना, 1998
26. दत्त, के. के., हिस्ट्री ऑफ फीडम मूवमेंट इन बिहार, वो.1, पटना, 1957
27. मजुमदार, आर. सी., हिस्ट्री ऑफ फ्रीडम मूवमेंट इन इंडिया, वो.1, के. एल. मुखोपाध्याय, कलकत्ता, 1963
28. मिश्र, भरत, 1857 की क्रांति और उसके प्रमुख क्रांतिकारी, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 1998
29. सेन, सुरेंद्रनाथ, अठारह सौ संत्तावन, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, 1957